

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, जून 2024

प्रलिस के लिये:

[भारतीय रिज़र्व बैंक \(RBI\)](#), [गैर-नषिपादति परसिंपतति](#), [बैड लोन](#), [डजिटिल वयक्तक ऋण](#), [SARFAESI अधनियिम, 2002](#), [पूजी पर्यापतता अनुपात](#), [मुद्रासफीत](#), [अवसफीत](#)

मेन्स के लिये:

बैंकगि क्षेत्र से संबधति मुददे, NBFC तथा बैंकों में अंतर।

स्रोत: आर.बी.आई

चर्चा में क्यों?

जून 2024 के लिये [भारतीय रिज़र्व बैंक \(RBI\)](#) की द्वि-वार्षिक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR) डजिटिल वयक्तक ऋणों के परसार एवं वित्तीय स्थिरता उपायों के प्रभाव पर समस्याओं को उजागर करते हुए वैश्विक अनश्चितताओं के बीच भारत की मज़बूत वित्तीय आघात-सह (resilience) को रेखांकित करती है।

जून 2024 के लिये FSR की मुख्य वशिषताएँ क्या हैं?

- वैश्विक मैक्रोफाइनेंशियल जोखमि: रिपोर्ट में कहा गया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा वित्तीय प्रणाली के बढ़ते जोखमि एवं अनश्चितताओं के बीच आघात-सहनीयता नहीं प्रदर्शित कर रही है।
 - [अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष \(IMF\)](#) का अनुमान है कि वर्ष 2024 में वैश्विक विकास दर 3.2% पर स्थिर रहेगी, जबकि [विश्व बैंक](#) ने 2.6% की दर का अनुमान लगाया है।
 - नकिट भवषिय की संभावनाएँ बेहतर हो रही हैं, लेकिन [मुद्रासफीत](#), [उच्च सार्वजनिक ऋण](#), [परसिंपततियों के बढ़े हुए मुल्यांकन](#), आर्थिक वखिंडन, भू-राजनीतिक तनाव, [जलवायु आपदाओं](#) और साइबर खतरों जोखमि बने हुए हैं। [उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाएँ \(EME\)](#) बाह्य झटकों और स्पलिओवर के प्रति संवेदनशील बनी हुई हैं।
- घरेलू मैक्रोफाइनेंशियल जोखमि: मज़बूत समष्टि आर्थिक बुनियादी ढाँचे तथा एक सुदृढ़ एवं स्थिर वित्तीय प्रणाली ने भारतीय अर्थव्यवस्था के सतत् वसितार को समर्थन प्रदान किया है।
 - [मुद्रासफीत](#) में कमी, मज़बूत बाह्य स्थिति तथा चालू राजकोषीय सुदृढीकरण से व्यापार और उपभोक्ता के विश्वास में वृद्धि हो रही है।
 - वित्तीय संस्थानों में [स्वस्थ तुलन-पत्र मज़बूत पूजी बफर](#), बेहतर परसिंपतति गुणवत्ता, पर्याप्त प्रावधान एवं पर्याप्त लाभ से घरेलू वित्तीय स्थिति मज़बूत हुई है।
- बेहतर परसिंपतति गुणवत्ता: [अनुसूचित वाणज्यिक बैंकों \(SCB\)](#) का [GNPA अनुपात](#) मार्च 2024 में घटकर 2.8% रह गया है, जो 12 वर्षों में सबसे कम है। [शुद्ध गैर-नषिपादति परसिंपतति \(NNPA\)](#) अनुपात भी सुधरकर 0.6% के पर पहुँच गया है।
 - आधारभूत तनाव परदृश्य के अंतगत मार्च 2025 तक GNPA अनुपात में 2.5% तक सुधार होने की आशा है।
 - यदि समष्टि आर्थिक परविश अत्यधिक रूप से खराब हो जाता है तब GNPA अनुपात में 3.4% तक की वृद्धि हो सकती है।
 - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (PSB) के लिये GNPA अनुपात के गंभीर तनाव परदृश्य में मार्च 2024 में 3.7% से बढ़कर मार्च 2025 में 4.1% हो सकता है।
 - कृषि क्षेत्र में GNPA अनुपात सर्वाधिक 6.2% रहा, जबकि वयक्तक ऋण 1.2% रहा। फरि भी [RBI](#), [वयक्तक ऋण वशिष रूप से डजिटिल एप के माध्यम से वयक्तक ऋण प्राप्त करने वालों से उत्पन्न होने वाली संभावित वित्तीय समस्याओं के बारे में चर्चित है।](#)
- जमा और ऋण वृद्धि: वित्त वर्ष 24 की दूसरी छमाही में जमा वृद्धि बढी, जो मार्च 2024 को समाप्त तमाही में 13.5% तक पहुँच गई।
 - [नजी क्षेत्र के बैंकों में जमा वृद्धि दर सबसे अधिक 20.1% रही](#), जिसके बाद वदिशी बैंकों में 15.1% तथा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में 9.6% की वृद्धि रही।
 - समग्र ऋण वृद्धि 19.2% पर स्वस्थ रही हालाँकि यह पछिली छमाही की तुलना में थोड़ी कम है।
 - RBI के नियमों के कारण उपभोक्ता ऋण में कमी आई, लेकिन फरि भी यह 32.9% के साथ ऋण पोर्टफोलियो का सबसे बड़ा घटक बना रहा।

■ पूंजी पर्याप्तता और लाभप्रदता:

- SCB के पास मज़बूत पूंजी बफर्स हैं, पूंजी से **जोखमि-भारति परसिंपत्त अनुपात (Capital to Risk-Weighted Assets Ratio-CRAR)** 16.8% पर स्थिर रहा, PSB में सुधार देखा गया तथा नज़ि/वदिशी बैंकों में मामूली गरीबट देखी गई।
- CRAR कसिी बैंक की उपलब्ध पूंजी का माप है जो उसके जोखमि-भारति ऋण जोखमि के प्रतशित के रूप में होता है। इसका उपयोग यह सुनिश्चित करने हेतु कया जाता है कि बैंकों के पास संभावति घाटे को संभालने और दवालियापन से बचने के लयि पर्याप्त पूंजी है।
- परसिंपत्तयिों पर रटिरन (Return on assets- RoA) और इक्वटी पर रटिरन (Return on Equity- RoE) क्रमशः 1.3% तथा 13.8% के दशक के उचतम स्तर के करीब हैं।
- **ROA एक लाभप्रदता** अनुपात है जो मापता है कि कोई कंपनी लाभ कमाने के लयि अपनी परसिंपत्तयिों का कतिना अचछा उपयोग करती है। इसकी गणना कसिी कंपनी की शुद्ध आय को उसकी कुल परसिंपत्तयिों से वभिजति करके की जाती है और इसे प्रतशित के रूप में व्यक्त कया जाता है।
- **ROE कसिी कंपनी की वत्तीय सेहत का आकलन करने के लयि एक महत्त्वपूर्ण मीटरकि है**, जसिकी गणना कंपनी की शुद्ध आय को इक्वटी फाइनेंसिंग से वभिजति करके की जाती है। यह समझने में मदद करता है कि लाभ उत्पन्न करने हेतु शेयरधारक इक्वटी का कतिनी कुशलता से उपयोग कया गया है।
- **तनाव परीक्षण परगामः** बैंकों ने तनाव के प्रतपर्याप्त लचीलापन दर्शाया है तथा SCB मध्यम और अत्यधिक तनाव परदृश्यों में समषट आर्थकि झटकों को संभालने के लयि पर्याप्त पूंजीकृत हैं।
 - तनाव परीक्षण एक विश्लेषणात्मक उपकरण है जसिका उपयोग RBI द्वारा यह आकलन करने के लयि कया जाता है कि कोई बैंक या वत्तीय प्रणाली प्रतकूल आर्थकि परदृश्यों का सामना कसि प्रकार कर सकती है।

नोटः FSR, RBI द्वारा अर्द्धवार्षकि प्रकाशन है। यह **वत्तीय स्थरिता और वकिस परषिद (FSDC)** की उप-समति के सामूहकि मूलयांकन को दर्शाता है, जसिकी अध्यक्षता RBI के गवरनर करते हैं। रपिरट भारतीय वत्तीय प्रणाली के लचीलेपन का मूलयांकन करती है और वत्तीय स्थरिता के लयि जोखमिों की पहचान करती है।

गैर-नषिपादति परसिंपत्तयिाँ कया हैं?

श्रेणी	ववरण
परभाषा	<ul style="list-style-type: none"> ■ कोई परसिंपत्ततिब NPA बन जाती है जब वह बैंक के लयि आय उत्पन्न करना बंद कर देती है। यह आमतौर पर एक ऋण या अग्रमि होता है जहाँ मूलधन या बयाज का भुगतान एक निश्चित अवधि के लयि बकाया रहता है। अधकिांश ऋणों हेतु यह अवधि 90 दिन होती है। ■ कृषि ऋणों हेतु अलपावधि फसल ऋणों को NPA माना जाएगा यदि मूलधन या बयाज की कसित दो फसल मौसमों के लयि बकाया रहती है। दीर्घावधि फसल ऋणों को NPA माना जाएगा यदि मूलधन या बयाज की कसित एक फसल मौसम के लयि बकाया रहती है।
NPA के प्रकार	<ul style="list-style-type: none"> ■ अवमानक परसिंपत्ततिः 12 महीने या उससे कम अवधि के लयि NPA। ■ संदगिध परसिंपत्ततिः यदि कोई परसिंपत्तति 12 महीने तक घटया श्रेणी में रहती है तो उसे संदगिध माना जाता है। एक संदगिध ऋण में वही कमज़ोरयिाँ होती हैं जो घटया संपत्तयिों में होती हैं। ■ हानि परसिंपत्तयिाँः ऐसी अप्राप्य परसिंपत्तयिाँ जनिकी वसूली की बहुत कम या कोई उम्मीद नहीं है, उन्हें पूरी तरह से बट्टे खाले में डालने की आवश्यकता है।
सकल NPA (GNPA)	<ul style="list-style-type: none"> ■ अनंतमि राशा किाटे बनिा NPA की कुल राशा। <ul style="list-style-type: none"> ◦ बैंक ऋण राशा किा एक प्रतशित प्रावधान के रूप में अलग रखते हैं। भारतीय बैंकों में, ऋण के लयि प्रावधान की मानक दर व्यवसाय क्षेत्र और उधारकरत्ता की पुनरभुगतान क्षमता के आधार पर 5 से 20% तक होती है। एनपीए के लयि, बेसल-III मानकों के अनुसार 100% प्रावधान की आवश्यकता होती है।
शुद्ध NPA	<ul style="list-style-type: none"> ■ सकल NPA - प्रावधान राशा।
NPA अनुपात	<ul style="list-style-type: none"> ■ इससे यह पता चलता है कि कुल अग्रमि राशा में से कतिनी राशा वसूल नहीं की जा सकती है। <ul style="list-style-type: none"> ◦ GNPA अनुपात कुल अग्रमिों के कुल GNPA का

अनुपात है।

- NNPA अनुपात कुल अग्रिमों के अनुपात को निर्धारित करने के लिये शुद्ध NPA का उपयोग करता है।

डजिटल व्यक्तिगत ऋण एक चर्चा का विषय क्यों हैं?

- **डजिटल व्यक्तिगत ऋण की वृद्धि:** डजिटल एप्स के माध्यम से वितरित व्यक्तिगत ऋणों में अतद्विद्य खातों की हस्तिसेदारी सबसे अधिक है, जिससे वित्तीय स्थिरता के लिये चर्चा बढ़ गई है।
 - 2010 के दशक के मध्य तक, बैंक प्रायः बड़े उद्योगों को बड़े पैमाने पर ऋण देते थे। हालाँकि इनमें से कई ऋण खराब हो गए और वर्ष 2017 में बैंड लोन 10% तक पहुँच गए।
 - वर्ष 2017 के बाद, बैंकों ने उद्योगों को ऋण देना कम कर दिया और व्यक्तिगत ऋण, क्रेडिट कार्ड प्राप्तियाँ तथा आवास ऋण सहित खुदरा क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित किया।
 - **दवाला और शोधन अक्षमता संहिता, 2016** के कार्यान्वयन से बैंकों को खराब ऋणों की वसूली में मदद मिली, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ।
 - 2010 के दशक के मध्य में युवा, डजिटल रूप से समझदार उपभोक्ताओं को लक्षित करने वाले तत्काल ऋण एप का प्रसार हुआ और संभावित ऋण जाल में फँस गए।
 - पिछले 11 वर्षों में, डजिटल ऋण बाज़ार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो वर्ष 2023 तक अनुमानित 350 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच जाएगा।
- **बैंकिंग क्षेत्र पर प्रभाव:** खुदरा ऋणों की हस्तिसेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा बकाया राशिके मामले में यह औद्योगिक और सेवा ऋणों से आगे निकल गया है।
 - खुदरा ऋणों की खतरनाक वृद्धि ने RBI को न्यायिक उपायों को लागू करने के लिये प्रेरित किया, हालाँकि व्यक्तिगत ऋणों के लिये समग्र GNPA अनुपात लगातार कम हो रहा है, जो मार्च 2024 में 1.2% तक पहुँच जाएगा।
 - तत्काल ऋण एप्स के प्रसार ने कई उपभोक्ताओं के लिये कर्ज का जाल बँधा दिया है। ये एप्स अक्सर उपयोगकर्ताओं को उनकी क्षमता से ज़्यादा लोन लेने के लिये प्रेरित करते हैं, जिससे वित्तीय संकट पैदा होता है।
- **RBI की चर्चाएँ:** खुदरा ऋणों (आवास ऋण के अतिरिक्त) के कारण स्लपिज (गरिब) या अशोध्य ऋणों की वृद्धि तेज़ी से बढ़ रही है जो वित्त वर्ष 24 में नए NPA का 40% है।
 - 50,000 रुपए से कम के वयक्तिक ऋणों के संबंध में अपचरिता/चूक (Delinquency) का स्तर उच्च बना हुआ है। इनमें से कई ऋण डजिटल एप के माध्यम से NBFC-Fintech ऋणदाताओं द्वारा मंजूर किये गए थे।
 - 25 वर्ष से कम आयु के उधारकर्ताओं में चूक की दर सबसे अधिक 5% है। 26-35 आयु वर्ग में यह 3%, 36-45 वर्ष में 2% और 45 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में 1% है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में 3% की चूक दर दर्ज की गई है जबकि मिट्टी तथा अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में 2% की दर है।

डजिटल प्रसनल लोन

- ये मोबाइल एप्लीकेशन या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रदान किये जाने वाले ऋण हैं। परंपरागत बैंकों के विपरीत, ये ऋणदाता प्रायः न्यूनतम कागज़ी कार्रवाई और ऋण के तत्काल अनुमोदन के साथ सुव्यवस्थित आवेदन प्रक्रिया प्रदान करते हैं जिसके लिये वे प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं।
 - ऋण पहुँच की यह सुगमता व्यापक संख्या में लोगों को आकर्षित करती है, जिसमें वे लोग भी शामिल हैं जिनकी परंपरागत बैंकिंग सेवाओं तक सुगम पहुँच नहीं होती है।
 - डजिटल ऋण प्रदान करने वाले प्लेटफॉर्म उन लोगों तक पहुँच सुनिश्चित करते हैं जो बैंकिंग सेवाओं से वंचित हैं अथवा बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच अपर्याप्त है, जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिलता है और यह भारत सरकार का एक प्रमुख उद्देश्य है।

डजिटल प्रसनल लोन की वसूली के लिये क्या किया जा सकता है?

- **वित्तीय प्रौद्योगिकी:** फनितेक कंपनियों को वसूली के लिये स्वचालित पुनर्भुगतान योजनाओं और ऋण समेकन तकनीकों जैसे उपाय विकसित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
 - ऋण नषिपादन की नरितर नगिरानी की जानी चाहिये और संभावित चूक की जल्द पहचान की जानी चाहिये।
- **ऋण-पातरता मूल्यांकन:** क्रेडिट स्कोरिंग मॉडल के अन्य तकनीकों का अन्वेषण किया जा सकता है जो पारंपरिक क्रेडिट रिकॉर्ड के अतिरिक्त आय स्थिरता और वित्तीय व्यवहार पैटर्न जैसे कारकों पर आधारित हो सकता है।
- **बेहतर दक्षता:** पारंपरिक विधियों की तुलना में डजिटल NPA वसूली प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया जा सकता है। **संचार और डेटा विश्लेषण जैसे कार्यों को स्वचालित करने से अन्य क्षेत्रों के लिये संसाधन जुटाए जा सकते हैं।**
- **वधिक उपाय:** बकाया राशिके वसूली को सुविधाजनक बनाने के लिये ऋण वसूली अधिकरण (DRT) को उपयोग में लाया जा सकता है। **कुशल वसूली के लिये लोक अदालत और SARFAESI अधिनियम, 2002 जैसे वधिक साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिये।**

दृष्टाभेन्स प्रश्न:

प्रश्न. भारत में अनर्जक परसिंपत्तियों (NPA) की प्रवृत्तियों और बैंकिंग क्षेत्र की स्थिति पर इसके प्रभावों का परीक्षण कीजिये।

प्रश्न. भारत में डिजिटल वैयाक्तिक ऋण के चलन में आई वृद्धि का मूल्यांकन कीजिये। उनकी लोकप्रियता के मुख्य कारक क्या हैं और वे वित्तीय स्थिरता के लिये कौन-से जोखिम उत्पन्न करते हैं?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों में से कौन-सा हाल ही में समाचारों में आए 'दबावयुक्त परसिंपत्तियों के धारणीय संरचना पद्धति' (स्कीम फॉर सस्टेनेबल स्ट्रक्चरिंग ऑफ स्ट्रेसड एसेट्स/S4A)' का सर्वोत्कृष्ट वर्णन करता है? (2017)

- यह सरकार द्वारा नरूपति वकिसपरक योजनाओं की पारस्थितिकीय कीमतों पर वचिार करने की पद्धति है।
- यह वास्तवकि कठनाइयों का सामना कर रही बड़ी कॉर्पोरेट इकाइयों की वित्तीय संरचना के पुनर्संरचन के लिये भारतीय रजिर्व बैंक की स्कीम है।
- यह केंद्रीय सार्वजनकि क्षेत्र उपक्रमों के बारे में सरकार की वनिविश योजना है।
- यह सरकार द्वारा हाल ही में क्रयिान्वति 'इंसॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड' का एक महत्त्वपूर्ण उपबंध है।

उत्तर: (b)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/financial-stability-report,-june-2024>

